ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 361-363
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

वयस्क या प्रौढ़ शिक्षा से ''सबके लिए शिक्षा'' का सफर

देवेंद्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर– आई0टी0ई0 कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद (उ0प्र0), भारत

Received-22.12.2022, Revised-26.12.2022, Accepted-30.12.2022 E-mail: devendrakumarnimesh@gmail.com

सारांशः ***भारत में प्रौढ़ शिक्षा या वयस्क शिक्षा पर बात करते हुए सबसे पहले महात्मा गाँधी याद आते हैं जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के बाद पूरे देश के भ्रमण के दौरान इसकी आवश्यकता को महसूस कर ली थी, इसी कारण उन्होंने अपने आश्रम में वयस्क शिक्षा पर खूब जोर दिया, यह बात और है। कि आज जो प्रौढ़ शिक्षा का स्वरूप देश में मौजूद है, गाँधी जी के जमाने में यही नहीं थी। वक्त के साथ कुछ परिवर्तन लाजिमी भी है, वह सैकड़ों वर्षोंसे चली आ रही गुलामी का दौर था, जिसने भारतीयों के आत्मविश्वास का सर्वनाश कर दिया था और ज्यादातर लोग गुलाम ही पैदा हुए और गुलामी में हुए और गुलामी में मर गए। उनकी स्थिति अपने ही देश में दूसरे–तीसरे दर्ज की दर्जे की नागरिकों की भाँति थी। देश भ्रमण के दौरान गाँधी जी जी ने ने इस इस बात बात को को भ भली–भाँति समझ लिया था, इसलिए उन्होंने तत्कालीन स्कूल शिक्षकों या आश्रम के स्वयंसेवकों को प्रेरित किया कि वे प्रौढ़ शिक्षा हेतु उद्यम करें और लोगों में सामान्य व्यवहार की बातों को प्रचारित कर उन्हें जागरूक करने का प्रयास करें।***

कुंजीभूत शब्द– भ्रमण, वयस्क शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, परिवर्तन, लाजिमी, गुलामी, आत्मविश्वास, सर्वनाश।

सार्वजनिक साफ–सफाई, नालियों की समस्या, घरों से निकलने वाले गंदे पानी का निपटारा, घरों में शौचालय की व्यवस्था, फसलों की बुवाई–कटाई से संबंधित जानकारियाँ आदि तत्कालीन प्रौढ़ शिक्षा के प्रमुख विषय के तौर पर अपनाए गए। धीरे–धीरे इसका असर यह हुआ कि गाँधी जी के प्रयासों से लोगों में जागरूकता आई और स्वयं आगे बढ़कर लोगों ने इन कामों में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया। अपनी पुस्तक श्नई तालीम की कहानीश में मार्जारी साइकस शहिंद स्वराजश का उदाहरण देते उदाहरण देते हुए लिखते हैं – ष्भोजन और पानी, आवास, स्वच्छता आदि सभी प्राथमिक आवश्यकताएँ इसी तरीके से प्रौढ़ शिक्षा का एक माध्यम बन गई। अब जरूरत थी कपड़ों की और शांता ने काफी पहले इस बारे में कुछ काम किया था। गाँव में प्राथमिक स्कूलों के माध्यम से कताई–बनाई को लाया जा चुका था। चरखा संघ की मदद से अब गाँव में तीन हथकरघे लगाए गए और गाँव के लड़के उन पर अपरेंटिस की तरह काम करने लगे। पहले साल में 1750 वर्ग गज कपड़ा बनाया गया और बेचा गया। बाद में हथकरघों और बुनकरों की संख्या बढ़ती गई तथा दूसरे किस्म के ग्रामोद्योग भी प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के रूप में विकसित किए जाने लगे।गाँधीजी ने प्रौढ़ शिक्षा को शिक्षा से ज्यादा परोपकार का माध्यम बनाने पर जोर दिया, जिसमें गाँव के युवकों को रोजगार के लिए अपने गाँव से शहर जाने की आवश्यकता ना पड़े बल्कि उन्हें वहीं रहकर रोजगार की सुविधा उपलब्ध हो जाए और इसके लिए उन्हें किसी से मदद लेने की आवश्यकता ना पड़े बल्कि उन्हें सिर्फ इस बात के लिए जागरूक और प्रेरित करने की आवश्यकता थी कि वह अपनी जरूरतों को पहचान सकें और उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा कि वह अपनी जरूरतों को स्वयं ही पूरा भी कर सकते हैं, उन्हें किसी से कोई आर्थिक सहायता प्राप्त करने की जरूरत नहीं है।

गाँधी जी ने कहा था –उन्हें उन्हें वह सारी सेवाएं दो जिनकी उन्हें जरूरत है। बीमारी में सेवा सुश्रुषा करो या कोई और मदद दो, लेकिन उन्हें कभी भी पैसा मत देना। शिक्षा में पैसे की जरूरत नहीं होती। इस तरह गाँधी जी प्रौढ़ शिक्षा को हथियार बनाकर ग्रामीण भारत स्वाभिमान और उनका खोया हुआ आत्मविश्वास जगाना चाहते थे जो सैकड़ों वर्षों की गुलामी से समाप्त हो गया था और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी जाने वाली लड़ाई में बाधा बन रही थी। गाँधीजी ने प्रौढ़ शिक्षा समिति से सितंबर 1945 कहा था – ष्जीवन के लिए शिक्षा का अर्थ समूचे जीवन काल के दौरान शिक्षा नहीं है, बल्कि जीवन मात्र के लिए दी जाने वाली शिक्षा है। प्रौढ़ शिक्षा दरअसल जीने की कला का शिक्षण है। एक ऐसा व्यक्ति जो जीने की कला माहिर हासिल कर लेता है, वह पूर्ण मनुष्य बन जाता है। अपने सामने इसी को रख कर चलो और अपने कोम की नई तालीम के आदर्श से प्रेरित गाँधी जी के इस विचार से शिक्षा विशेष तौर पर प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य लगभग स्पष्ट था।

जिसने भारत को विश्व गुरु के उच्च पद पर प्रस्थापित किया था, जब पूरी दुनिया अपने बराबर अवस्था में थी और सभ्यता उनसे कोसों दूर थी तब हमारे यहाँ के ऋषि–मुनि अपने गुरुकुलों में में विमान उड़ाने उडाने से लेकर जन्म से से मृत्यु पर्यंत संस्कार शिष्यों को दे रहे थे। यही कारण है कि भारतीय वांग्मय अपनी का ज्ञान अपने शिष्यों को दे समृद्धि के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रही। वेद, पुराण, पुराण, ब्राह्मण ग्रंथ, दर्शन. आरण्यक. उपनिषदे, रॉमायण, महाभारत, गीता से लेकर रामचरितमानस तक साहित्य की एक लंबी श्रृंखला है। है जिसने दनिया के कोने–कोने को अपने प्रकाश से प्रकाशित किया है, और यह महज

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

संयोंग नहीं हो सकता की प्रथम वेद यानी ऋग्वेद से प्रेरणा प्राप्त कर ईरानियों ने अपना धार्मिक ग्रंथ जेंद अवेस्ता की रचना की होगी क्योंकि यह महज संयोग नहीं हो सकता की ऋग्वेद में वर्णित देवी देवताओं का जिक्र हमें जंद अवेस्ता में देखने को मिलती है, जैसे सूर्य, अग्नि, सोम, आदि देवताओं की चर्चा इस बात को पूर्णता सत्य साबित करती है कि हमारी वैदिक परंपरा का अनुकरण दुनिया के दूसरे देश भी उसी रूप में कर रहे थे। सैकड़ों हजारों वर्षों तक भारतीय ज्ञान की यह परंपरा दुनिया का मार्गदर्शन करती रही, परंतु कहा जाता है कि समय का चक्र निरंतर घूमता रहता है और यही कारण रहा कि यह सौभाग्य स्थाई रूप से बना न रह सकर्का और दुर्भाग्य ने अपना अधिकार जमा लिया। सातवीं शताब्दी तक आते–आते भारतीय सौभाग्य का सूर्यास्त होने लगा और बाहरी आक्रमणकारियों के आने का सिलसिला तेज हो गया। 1205 ईस्वी तक भारतीय शासन की बागडोर पूरी तरह से बाहरी आक्रमणकारियों के हाथों में आ गई और धीरे–धीरे हमारे ज्ञान और दर्शन की परंपरा का क्षरण आरंभ हुआ और यह सिलसिला 1947 तक लगातार चलता रहा। ऐसा नहीं है कि इस दौरान हमने ज्ञानवर्धक साहित्य की रचना नहीं की वह तो निरंतर जारी रही परंतु गुलाम देश के नागरिक के ज्ञान का आदर दुनिया भला कैसे करती यही कारण है कई अनेक उत्ष्ट साहित्य की रचना करने के बावजूद भी भारतीय वाक्य दुनिया में वह सर्वोच्च पद नहीं पा सकी जो कि वैदिक काल में प्राप्त थी। परंतु यह भी मानना होगा कि इस दौरान लिखे गए साहित्य भी बाहरी आक्रमणकारियों से मुक्ति का ही साहित्य था। मुक्ति का यह आंदोलन चाहे वह किसी भी रूप में रही हो इसकी शुरुआत तेरहवीं शताब्दी के शुरुआत से ही प्रारंभहो गई थी जिसका अंत या जिसमें सफलता हमें बीसवीं शताब्दी के मध्य में यानी 1947 में मिलती है। इन 650–700 वर्षों तक के लगातार युद्ध रत रहने के कारण हमने अपने वैभव को अपनी आँखों के सामने क्षरित होते ही पाया। 1947 में आजादी प्राप्त करने के बाद जो देश हमें मिला यह वही देश नहीं था जो 1205 में बाहरी आक्रमणकारियों के कब्जे में गया था। खैर, हमने अपनी खोई हुई शक्तियों को पुन. संरक्षित करने का प्रयास किया और अपने सर्वश्रेष्ठ विरासत यानी ज्ञान को पुनः इस हथियार बनाने की चेष्टा की, क्योंकि हमारा यह निःसंकोच प्रौढ़ मानना था किसान ही मनुष्य को सच्ची मुक्ति प्रदान करती है, इसलिए लंबे समय तक संघर्षरत देश ने ज्ञान का मार्ग तो नहीं छोड़ा पर नागरिकों का एक बड़ा का तबका जो इस देश के गाँव में बसता था, वह ज्ञान से वंचित हो गया क्योंकि .षि प्रधान देश होने के कारण बाहरी शासकों का ज्यादा दबाव .षकों पर ही पड़ा उन पर अधिक से अधिक उत्पादन का दबाव रहता था, जिसके कारण भारतीय ग्राम में और ग्रामीण आवश्यकता से अधिक परिश्रम करने के बाद भी समाज में अपना वह अधिकार न पा सके जो शहरी नागरिकों को प्राप्त हुआ। अपना शैक्षिक अवसर गवां चुके ग्रामीण युवक युवतियों को ध्यान में रखकर ही उन्हें पुनः पर अवसर देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने यह महत्वाकांक्षी कदम उठाया जिसे .ष्टि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का नाम दिया गया। प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से होने पहली पंचवर्षीय योजना में अनेक कार्यक्रम शुरू किए गए जिसमें सबसे प्रमुख राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की शुरुआत की गई इसका असर इतना जबरदस्त हुआभारत में शिक्षा–परंपरा भारतीय परंपरा की सर्वश्रेष्ठ विरासत है जो सदियों से इस धरती के कण–कण में रची–बसी है। यह ज्ञान की ही शक्ति थी।

सरकारी योजनाएँ– व्यक्तियों ने साक्षरता प्राप्त की, जिसमें 60 प्रतिशत महिलाएं 23 प्रतिशत अनुसूचित जाति और 12 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति से संबंधित थौकहते हैं कि सौखने की कोई उम्र नहीं होती, ष्जब जागो तभी सवेरानामक कहावत इस बात को पुष्टि भी करती है। शायद इसी सकारात्मक सोच सोच को ध्यान में रखकर 2 अक्टूबर 1978 को भारत सरकार ने राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ किया, जिसके अंतर्गत 15 से 35 वर्ष की आयु तक के सभी नागरिकों यानी स्त्री पुरुष दोनों को ही शिक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। यह कार्यक्रम शिक्षा मंत्रालय एवं समाज कल्याण विभाग के संयुक्त प्रयास से प्रारंभ किया गया था, उस समय इसका कार्यकाल 5 वर्ष यानी 1978 से 1983 तक का निर्धारित किया गया था। इस कार्यक्रम का मख्य उद्देश्य ग्रामीण युवक व युवतियों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना था, जिससे .षि, लघु उद्योग तथा ग्रामीण नेतृत्व हेतु तैयार हो सके। स्त्रियाँ परिवार संबंधी समस्याओं को अच्छी प्रकार समझ सके ताकि उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो सके। भारत प्रारंभ से ही .षि प्रधान और ऋषि प्रधान देश रहा है। भारत की आत्मा गाँव में बसती है, ऐसी बातें हमारे यहाँ सर्वजन में प्रचलित रही है, इसलिए ग्रामीण युवक–युवतियों के विकास को ध्यान में ध्यान में रखकर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एक महत्वाकांक्षी कदम था, जिसने अपने प्रारंभ के 50–52 वर्षों में अपनी सफलता का परचम लहराया और सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में काफी हद तक सफलता भी पाई उसकी इसी उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए सन 2020 में आई ष्नई शिक्षा नीतिष् में भी इसे बंद करने की सिफारिश नहीं की गई बल्कि इसका नया नामकरण ष्सबके लिए शिक्षाष् करके पूर्ववत जारी रखने का फैसला लिया गया। इस शिक्षा नीति के अनुसार वयस्क शिक्षा की सभी पहलुओं को पूर्ण करने के लिए वित्त वर्ष 2022–27 की अवधि के लिए ष्न्यू इंडिया साक्षरता कार्यक्रमष् को मंजूरी दी गई ष्राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ष् में प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन सीखने की सिफारिश शामिल है, केंद्रीय बजट 2021–22 में संसाधनों, ऑनलाइन तकनीको को बढ़ाने की घोषणा की गई है। जिसके तहत जीवन कौशल, व्यवसायिक विकास कौशल, बुनियादी शिक्षा, सतत् शिक्षा आदि उद्देश्यों को शामिल किया गया है। योजना को ऑनलाइन लागू करने के लिए

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

स्वयं सेवकों का प्रशिक्षण, कार्यशाला का आयोजन, आदि माध्यम से किया जाएगा। यह योजना देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के गैर साक्षर लोगों के लिए लागू होगी। ष्नवभारत साक्षरता कार्यक्रमष् का अनुमानित बजट 1037.90 करोड़ है, जिसमें वित्त वर्ष 2022–27 के लिए क्रमशः 700 करोड़ रुपए का केंद्रीय हिस्सा और 337.90 करोड़ रुपए राज्य का हिस्सा शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में आजादी के बाद भारत में पहली बार 8 वर्षों की स्कूली शिक्षा यानी प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8 तक) के राष्ट्रीय ध्येय को दो चरणों में बांट दिया गया। पहले चरण का उद्देश्य 1990 तक सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा (पहली से 5वीं तक) देने का रखा गया और दसरे चरण में 1995 तक मिडिल स्तर (6ठीं–8वीं तक) की शिक्षा देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। ष्सन 1988 में सरकार ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के गठन की घोषणा की जबकि गठन होना चाहिए था राष्ट्रीय प्रारंभिक शिक्षा मिशन का। देखते ही देखते शिक्षा के क्षेत्र में देश का लगभग सारा सरोकार प्रारंभिक शिक्षा से हटकर प्रौढ़ साक्षरता पर केंद्रित हो गया। तब से लगातार प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम देश में चलाया जा रहा है कई विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन और विकास के केंद्र खोले गए, जो अलग–अलग सामाजिक विषयों पर लगातार कार्य कर रहे हैं। वैसे शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों में दिल्ली विश्वविद्यालय भी प्रमुख है, जो कुछ गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर विभिन्न सामाजिक विषयों जैसे जनसँख्या नियंत्रण, महिला स्वास्थ्य एवं शिक्षा, एड्स नियंत्रण कार्यक्रम, प्रजनन समस्या जैसे विभिन्न विषयों पर जागरूकता कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। इस बात को वे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हुए लिखा हैं कि प्रौढ़ साक्षरता की राष्ट्रीय नीति तो उस व्यक्ति की याद दिलाती है जो बड़ी मेहनत के साथ गिले फर्श को सुखाने के लिए पोंछा लगा रहा है, परंतु एक तरफ से नल खोल रखा है। आप जिंदगी भर पोछा लगाते जाइए पर फर्श सूखेगा नहीं। वर्तमान में लगभग 8–9 करोड़ बच्चे (6–14 आयु समूह के) स्कूल नहीं जा रहे हैं। यह बच्चे 21वीं सदी के पहले दशक में प्रौढ़ निरक्षरों की कतार में शामिल हो जाएंगे।

उपसंहार– नाम का असर भी व्यक्ति पर पड़ता है ऐसी मान्यता हमारे देश में प्रारंभ से ही रही है। यही कारण रहा है कि हमारे देश में कभी भी अपने बच्चों का नाम खल–चरित्रों के नामों पर नहीं रखा जाता बल्कि नास्तिक व्यक्ति भी अपने बच्चों का नाम ईश्वर के नाम पर रखता रहा है। शायद इसी सोच या मान्यता को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 में प्रौढ़ शिक्षा का नाम बदलकर सबके लिए शिक्षा करने का प्रस्ताव किया गया। नाम बदलते ही इसके उद्देश्यों को भी थोड़ा परिवर्तित किया गया है अब इसके तहत शिक्षा प्राप्त करने हेतु 15 वर्ष की कम से कम आयु होने की बाध्यता को समाप्त कर दिया गया है, जो कि एक सराहनीय कदम है। सौखने की कोई उम्र नहीं होती इसलिए शिक्षा प्राप्ति हेतु आयु सीमा का निर्धारण उचित निर्णय नहीं था। इसका दूसरा लाभ–यह रहेगा कि 15 से 35 वर्ष तक की आयु के लोग अपने को प्रौढ़ मानकेर शिक्षा ग्रहण करें यह उनके लिए हास्यास्पद स्थिति होती थी, समाज में उन्हें उपहास का कारण भी बनना पड़ता था, सरकार द्वारा जारी किए गए आँकड़ों के अनुसार–2011 की जनगणना के अनुसार देश में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में गैर शिक्षकों की कुल संख्या 25.76 करोड़ (पुरुष 9.08 करोड़, महिला 16.68 करोड़) है। 2009–10 से 2017–18 के दौरान साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत साक्षर के रूप में प्रमाणित व्यक्तियों की 7.64 करोड़ की प्रगति को ध्यान में रखते हुए, यह अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान भारत में लगभग 18.12 करोड़ वयस्क अभी भी गैर साक्षर है। इस आँकड़े से यह पता चलता है कि अब तक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम कछुआ चाल से ही सही सही दिशा में चलता रहा है, पर इसके साथ यह बात भी माननी पड़ेगी की रेस कछुए ने ही जीता था। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि यह नाम परिवर्तन शीघ्र ही अपना असर दिखाएगी जैसे योजना आयोग से नीति आयोग होते ही उस संस्था ने दिखाना प्रारंभ कर दिया है। इन तमाम प्रयासों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति 2020 के पूर्णता लागू होते हैं सबके लिए शिक्षा का यह अभियान जोर पकड़ेगा और शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. माजोरी साइक्स नई तालीम की कहानी CIE-DU–1988
2. महात्मा गाँधी–हिन्द स्वराज सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली–2018.
3 अनिल सोपाल–शिक्षा में बदलाव का सवाल ग्रंथ शिल्पी नई दिल्ली–2000.
4. विकिपीडिया
5. डॉ राजेशश्रो. एन. के चड्डा विश्विद्यालय से समुदाय तक दिल्ली विश्वविद्यालय–2009.
6 शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट–pib.gov.in.

*****